International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 4, July-August, 2025

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके व्यावसायिक आकांक्षा स्तर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. सुनिता शर्मा[1], किरण सैनी[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज, जयपुर
[2]बी. एड., एम. एड. छात्रा, बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज, जयपुर

सारांश

मनुष्य का महत्वांकाक्षी होना एक स्वभाविक गुण है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में कुछ ना कुछ विशेष प्राप्त करना चाहता है। सभी व्यक्तियों की इच्छाएँ अलग–अलग होती है। परन्तु इनमें से बहुत कम लोग अपनी इच्छाओं को मूर्त रूप दे पाते हैं। उदाहरणार्थ – जैसे कोई व्यक्ति चिकित्सक बनना चाहता है लेकिन विद्यालय का चयन, उसमें प्रवेश खर्च तथा पढ़ाई सम्बन्धी खर्च जैसी बाधाओं को वह दूर नहीं कर लेगा तब तक वह अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप चिकित्सक नहीं बन सकेगा।संसार में हर प्राणी अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। सूर्य, चन्द्र, सितारे सब अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहते हैं। तो फिर, फिर मैं (विद्यार्थी) अपने जीवन को बिना उद्देश्य कैसे रख सकता हूँ। संसार में शायद ही ऐसा कोई प्राणी होगा जिसकी कोई आकांक्षा न हो। कोई यश चाहता है, कोई धन चाहता है, कोई नेता बनने की इच्छा रखता है तो कोई लेखक बनने की। कोई सिनेमा का कलाकार बनना चाहता है। कोई डॉक्टर, कोई इंजीनियर, व्यापारी बनकर अपार धन और यश कीर्ति को प्राप्त करना चाहता है।

की–वर्ड:- उच्च माध्यमिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि, व्यावसायिक आकांक्षा स्तर

परिचय

शिक्षा मानव को मुक्ति का मार्ग दिखलाती है। शिक्षा के द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों और फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है और हमारे जीवन को सुसंस्कृत करती है अर्थात् जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्यास्त होने पर कुम्हला जाता है ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति कमल के फूल की भाँति खिल उठता है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली सतत् प्रक्रिया है जो बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर उसे पूर्णता प्रदान करती है। जिस प्रकार शिक्षा एक ओर बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनाती है उसी प्रकार दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी शक्तिशाली एवं आवश्यक साधन है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शों, आशाओं, आकांक्षाओं तथा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक विरासत को हस्तान्तरित करता है। शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है। शिक्षा के कार्य में भाग लेने वाले तीन घटक है। शिक्षक, पाठ्यक्रम और शिक्षार्थी इस अर्थ में एक व्यक्ति सीखने तथा एक व्यक्ति 4 सीखाने वाला होता है। अंग्रेजी भाषा में शिक्षा के लिए 'एजूकेशन' शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसकी उत्पत्ति लेटिन भाषा के तीन शब्दों 'एजूकेटम', 'एजूकेयर' तथा 'एजूसीयर' से मानी जाती है। 'एजूकेटम' शब्द ई + ड्यूको से मिलकर बना है जिसमें ई का अर्थ है – अन्दर से तथा ड्यूको का अर्थ है – बाहर से निकालना अर्थात् व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों को बाहर लाना। 'एजूकेयर' शब्द का अर्थ है – प्रेरणा, पथ–प्रदर्शन अर्थात् शिक्षा व्यक्ति के जन्मजात गुणों को विकसित करती है। शिक्षा को ज्ञान का पर्याय माना जाता है तो कहीं सूचना प्रदान करना, तो कहीं जीवन जीने की कला के रूप में व्याख्या की गई है। महात्मा गांधी ने शिक्षा को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है कि शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर मन आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।

समस्या का औचित्य :–

प्रत्येक अनुसंधान कार्य को करने से पूर्व एक समस्या का चयन आवश्यक होता है वो समस्या किसी व्यक्ति अथवा समूह से संबंधित होती है जब अनुसंधानकर्ता उस समस्या का चयन करता है तो उसके कोई उद्देश्य व लक्ष्य होते है उस समस्या को चुनने का उसका कोई न कोई औचित्य अवश्य होता है जिस किसी समस्या को अनुसंधानकर्ता चुनता है उस समस्या का समाधान योग्य होना भी आवश्यक होता है ऐसी समस्या जिनका कोई समाधान ना हो सकता हो अथवाजिनके समाधान की आवश्यकता ही न हो अथवा जिन समस्याओं को उठाने का कोई औचित्य ही सिद्ध न होता हो, ऐसी समस्या रचना के लिए व्यर्थ होती है किसी भी समस्या का औचित्य उसके परिणामों की विस्तृत क्षेत्र में सार्थकता एवं उपयुक्तता के आधार पर निश्चित किया जाता है।

विद्यार्थी अपना अधिकतर समय कक्षा के मित्रों के साथ व्यतीत करता है और जब उच्च माध्यमिक स्तर पर विषय चुनाव का समय आता है तो वह स्वयं की इच्छा अनुसार तथा मित्रों को विषय चुनाव को लेकर कशमकश में रहता है कि वह किस विषय का चुनाव करें इस तरह विद्यार्थी अपने स्वं विवेक से निर्णय लेकर अपने साथियों द्वारा चयनित विषयों का चुनाव कर लेता है जिसके कारण भविष्य में उस विषय में रूचि न होने के कारण उसकी प्रगति में अवरोध उत्पन्न हो जाता है। शिक्षा में नित्य नये विचारों ने चुनौतियाँ दी है जिससे विद्यार्थी जगत में आकांक्षाओं का पर्यावरण स्वतः भाव से निर्मित हो गया है। अतः शोधार्थी ने शोध समस्या से सम्बन्धित इस समस्या का चयन किया है–

समस्या से उभरने वाले प्रश्न निम्नांकित है–

1. क्या सरकारी विद्यालयों में अध्ययरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यवसायिक आकांक्षा स्तर निम्न होता है?
2. क्या निजी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यवसायिक आकांक्षा का स्तर उच्च होता है?
3. क्या उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के .शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जाता है?
4. क्या उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर उनके शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव पडता है?

समस्या का कथन :–.

"उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके व्यावसायिक आकांक्षा स्तर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि उनके व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के निम्न शैक्षिक उपलब्धि उनके निम्न व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि उनके व्यावसायिक आकांक्षा स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पाया जाता है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के निम्न शैक्षिक उपलब्धि उनके निम्न व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पाया जाता है।

सम्बन्धित साहित्य

1. **ब्रेन्डो के. ब्रेयन्त (2002):** इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के आकांक्षा पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना था। अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।

इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि उत्कर्ष प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों के विद्यालय का वातावरण स्वस्थ था। तथा इन उत्कर्ष प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों ने निम्न प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा आकांक्षा लक्ष्य प्राप्त किया।

2. **क्लाउडिया बुचमनन, बेन डाल्टन (2002)**: इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थी के शैक्षिक आकांक्षा व अन्तःप्रक्रिया का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के निष्कर्ष में इन्होनें पाया कि व्यक्ति की आकांक्षा पर माता–पिता व समूह (साथी) का प्रभाव होता है। इस अध्ययन के अनुसार विद्यार्थी की आकांक्षा उस विद्यालय के द्वारा निर्धारित होती है, जिसमें वह अध्ययन करता है।
3. **पीटर, पॉल (2002)**: इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य महाविद्यालय चयन एवं उपस्थिति के प्रति माध्यमिक स्कूलों के छात्रों की आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च माध्यमिक विद्यालय में उन्हें अपने आकांक्षा अनुरूप महाविद्यालय में प्रवेश के लिए तैयार नहीं किया जाता है और इस समस्या के हल के लिए विद्यालय एवं महाविद्यालय के बीच कोई निश्चित नीति निर्धारित करना आवश्यक पाया गया।
4. **जागेटिया, नन्दिनी (2002)**:– इस अध्ययन का उद्देश्य किशोरों के जीवन मूल्यों, स्वधारणाओं एवं आकांक्षा में संबंध ज्ञात करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि किशोर जीवन मूल्यों/स्वधारणाओं एवं आकांक्षाओं में भिन्नता रखते है।
5. **माथुर, मनोरमा (2002)**: इस अध्ययन का उद्देश्य शारीरिक विकलांग एवं सामान्य बालकों की आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि सामाजिक, ज्ञानात्मक मूल्यों के साथ–साथ शारीरिक विकलांग व सामान्य बालकों की आकांक्षा में अन्तर पाया जाता है।
6. **नटराजन, दंदापानी (2003)**: इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के आकांक्षा प्राप्ति पर व्यावसायिक आकांक्षा स्तर के नियंत्रण के प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि निजी विद्यालय खुले में तथा सरकारी विद्यालय नियंत्रित वातावरण में थे। ये सरकारी विद्यालय उच्च आकांक्षा प्राप्ति में सहायक थे। जबकि खुले या स्वतन्त्र विद्यालय निम्न आकांक्षा प्राप्ति में सहायक थे। अतः विद्यार्थी नियंत्रित वातावरण में उत्तम लक्ष्य प्राप्त करता है।

साहित्य विवेचना

प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके व्यावसायिक आकांक्षा स्तर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। इससे सम्बन्धित अध्ययन निम्न है –ब्रेन्डो के. ब्रेयन्त (2002), क्लाउडिया बुचमनन, बेन डाल्टन (2002), पीटर, पॉल (2002),जागेटिया, नन्दिनी (2002), माथुर, मनोरमा (2002) ,नटराजन, दंदापानी (2003) अतः उपरोक्त शोध अध्ययनों में शैक्षिक उपलब्धि का उनके व्यावसायिक आकांक्षा स्तर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन से सम्बन्धित अनेक शोध कार्य किये गये है। विद्यार्थी अपना अधिकतर समय कक्षा के मित्रों के साथ व्यतीत करता है और जब उच्च माध्यमिक स्तर पर विषय चुनाव का समय आता है तो वह स्वयं की इच्छा अनुसार तथा मित्रों को विषय चुनाव को लेकर कशमकश में रहता है कि वह किस विषय का चुनाव करें इस तरह विद्यार्थी अपने स्वं विवेक से निर्णय लेकर अपने साथियों द्वारा चयनित विषयों का चुनाव कर लेता है जिसके कारण भविष्य में उस विषय में रूचि न होने के कारण उसकी प्रगति में अवरोध उत्पन्न हो जाता है।

शोध विधि एवं उपकरण :–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु अनुसंधान विधि के रूप में **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में दत्त संकलन हेतु **मानकीकृत उपकरण (डॉ. जे.एस. ग्रेवाल)** का निर्माण किया गया है। प्रश्नावली में कुल 8 प्रश्न रखे गये है। उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके व्यावसायिक आकांक्षा स्तर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययनका चयन किया। अध्ययन में सांख्यिकी के रूप में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :–

शोधकर्त्री ने सीमित समय को ध्यान रखते हुये निश्चित समय में शोध कार्य पूर्ण करने के लिए न्यादर्श हेतु यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया।

अनुसंधान में प्रयुक्त चर

- **स्वतंत्र चर** :–शैक्षिक उपलब्धि
- **आश्रित चर** :–विद्यार्थी आकांक्षा स्तर

परिकल्पना–1
उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि उनके व्यावसायिक आकांक्षा स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पाया जाता है।

क्र.सं.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (SD)	टी मूल्य (T-Value) (0.05)	Result
1.	निजी विद्यालय के विद्यार्थी	50	16.7	3.9	0.13	स्वीकृत
2.	सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	50	16.6	3.5		

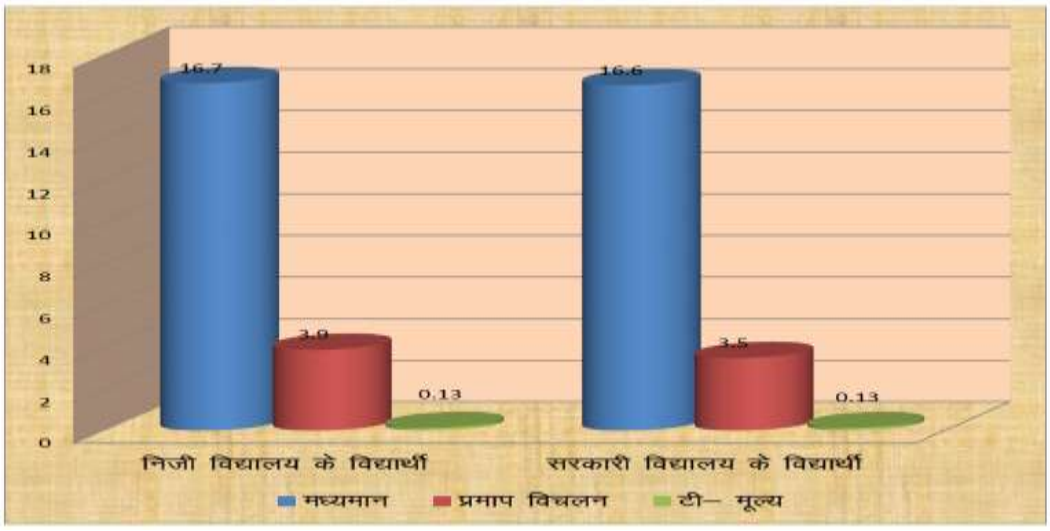

व्याख्या एवं विश्लेषण

प्रस्तुत तालिका उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि उनके व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर में सार्थक अन्तर से सम्बन्धित आँकड़े प्रस्तुत करती है। कि त्र 98 का टी सारणी का मान 0.13 प्राप्त हुआ है। कि त्र 98 व सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त ज का मान 1.98 है।

गणना से प्राप्त मान 0.13 सारणी से प्राप्त मान 1.98 से कम है। इस प्रकार बनायी हुयी शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि उनके व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर में सार्थक अन्तर का अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि उनके व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर अन्तर नहीं है, अर्थात् हो सकता है निजी विद्यालय व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी समाज में उच्च पद प्राप्त करना चाहते हो।

परिकल्पना–2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के निम्न शैक्षिक उपलब्धि उनके निम्न व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पाया जाता है।

क्र. स.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (SD)	टी–मूल्य (T-Value 0.05)	Result
1.	सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	50	79.22	8.7	1.76	स्वीकृत
2.	सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि	50	76.56	6.0		

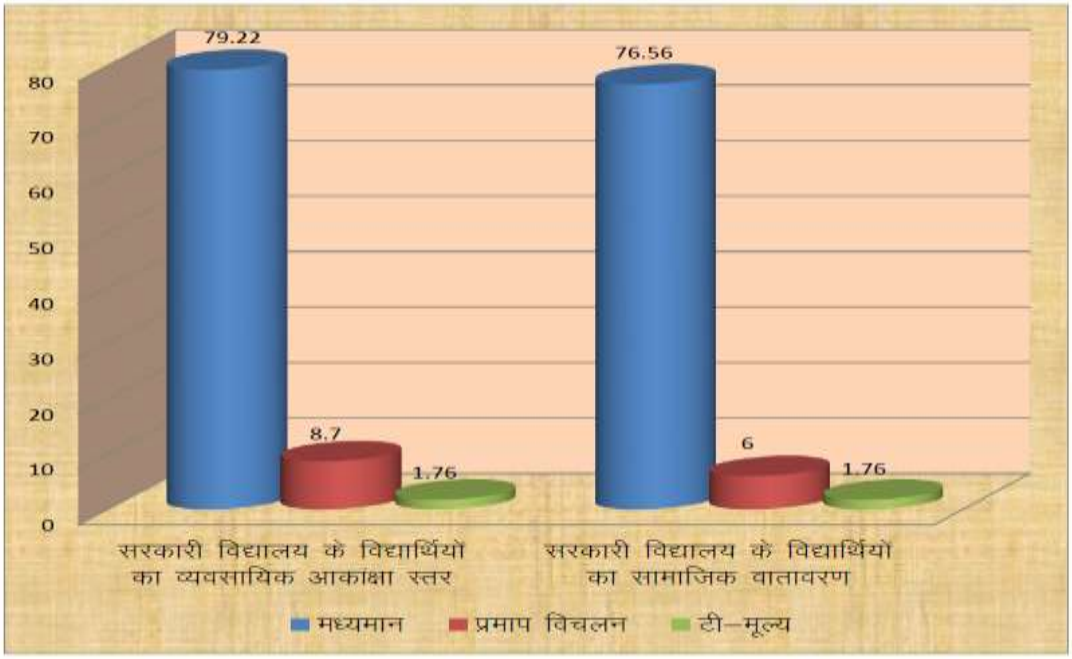

व्याख्या एवं विश्लेषण

प्रस्तुत तालिका उच्च माध्यमिक स्तर के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के निम्न शैक्षिक उपलब्धि उनके निम्न व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर के प्रभाव के आँकड़े प्रस्तुत करती है। कि्त्र 98 का टी सारणी का मान 2.5 प्राप्त हुआ है। कि्त्र 98 व सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त ज मूल्य का मान 1.98 है। गणना से प्राप्त मान 1.76 सारणी से प्राप्त मान 1.98 से कम है। इस प्रकार बनायी हुई शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के निम्न शैक्षिक उपलब्धि उनके निम्न व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर के प्रभाव का अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के निम्न शैक्षिक उपलब्धि उनके निम्न व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर का प्रभाव नहीं पड़ता है अर्थात् हो सकता है सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी अपने लक्ष्य के लिए स्वविवेक से निर्णय लेते है तथा उनमें स्वयं में पढ़ने की इच्छा शक्ति होती है।

निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के उच्च शैक्षिक उपलब्धि उनके निम्न व्यावसायिक आंकाक्षा स्तर में सार्थक अंतर का अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के उच्च शैक्षिक उपलब्धि उनके निम्न व्यावसायिक आंकाक्षा स्तर में सार्थक अंतर है, अर्थात् हो

सकता है कि निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की तरह सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के माता–पिता की उच्च पद–प्रतिष्ठा, श्रेष्ठ विद्यालय व सुख सुविधायें नहीं होती हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- चार्टर वी. गुड (1993) : ''अनुसंधान परिचय'', आगरा, चावला एण्ड संस।
- धवन और नितेश (2006) : ''सर्व शिक्षा अभियान एक अध्ययन'', मध्यप्रदेश।
- कपिल एच. के. (2012) : ''सांख्यिकी के मूल तत्व'', आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाऊस।
- मंगल एस. के. (2008) : ''शैक्षिक अनुसंधान एवं विधियाँ'', नई दिल्ली, प्रिंटिग हॉल ऑफ इण्डिया।
- नवरंग राय व रोशन लाल : ''सामान्य जागरूकता व सामान्य अध्ययन'', राय पब्लिकेशन्स।

Websites

[1]. https://www.iosrjournals.org/iosr-jhss/papers/Vol.%2024%20Issue6/Series-/B2406060812.
[2]. https://www.webology.org/data-cms/articles/20220405120053pmwebology%2018%20(6)%20-%20320%20pdf.
[3]. https://ijcrt.org/papers/IJCRT1813472.
[4]. https://echetana.com/wp-content/uploads/2019/08/13.-R-E-Dr.-Chittaranjan-Nayak.